4. महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झा

प्रस्तुत पाठ ताराकान्त मिश्र द्वारा लिखल गेल अछि । एहि पाठ मे डा० सर गंगानाथ झाक महान व्यक्तित्व आ कृतित्वक चर्चा कयल गेल अछि । डॉ० झा अद्वितीय क्षमतावला व्यक्ति छलाह । अपन कुशाग्रता, सूचीबद्ध दिनचर्या, विद्वता आ विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदकेँ सुशोभित कयनिहारमे डॉ० झाक खूब ख्याति छलनि । ओ एकटा छोट हिमालय सदृश छलाह । स्वस्थ शरीरमे बड़प्पनक सभ गुण सँ सम्पन्न । निष्ठावान, लगनशील, कठिन परिश्रमी, दृढ़ संकल्पक संग-संग महान साधक सेहो छलाह । राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय विभिन्न उपाधि आ सम्मानसँ सम्मानित छलाह । प्रयाग विश्वविद्यालयक प्रथम निर्वाचित कुलपति छलाह । प्राय: ई प्रथम व्यक्ति छलाह जे स्वेच्छासँ एहि पदकेँ छोड़ि देलनि ।

पंडित गंगा नाथ झा मिथिलाक विद्वत् मणिमालाक एक गोट जगमगाइत रत्न छथि । ओ दड़िभंगा जिलाक सरिसव पाहीटोल गामक निवासी छलाह । मुदा हुनक जन्म अपन मातृक गन्धवारि गाममे सन 1871 ई. मे भेल छलनि । हिनक पिताक नाम श्री तीर्थनाथ झा छलनि। मातृक पक्षसँ गंगानाथ बाबू दड़िभंगा राज परिवारसँ सम्बन्धित रहथि ।

बाल्यकालहिंसँ ई बड़ तीव्र बुद्धि रहथि आर एहन मान्यता छैक जे आजीवन हिनका दिगभ्रम नहि भेलनि । जहिना ई प्रतिभाशाली रहथि तहिना बालहिं अवस्थासँ शरीरसँ सेहो ह्रस्ट-पुष्ट । जखन ई मात्र सात वर्षक रहथि, राजकुमार लक्ष्मीश्वर सिंह हिनका गन्धवारिसँ दड़िभंगा लऽ गेलथिन आर ओ दड़िभंगेमे रहि अपन शिक्षा प्रारंभ कएलनि; दड़िभंगामे रहि ओ राज स्कूलसँ ई 1886 ई. मे इन्ट्रैन्स पास कएलनि तथा अग्रिम शिक्षा हेतु काशी जाय क्वीन्स कालेजमे प्रवेश लेलनि । समग्र शिक्षा अवधिमे हिनका दड़िभंगा राज परिवारसँ शिक्षण व्यय भेटइत रहलनि ।

गंगानाथ झा इन्ट्रेन्स परीक्षा तृतीय श्रेणीमे पास भेल रहथि; मुदा कालेजमे प्रवेश पवितहिं हिनकर प्रतिभा जागि उठल । प्रथमहिं वर्षक फाइनल परीक्षामे ई समस्त युक्त प्रान्तमे सर्व प्रथम भऽ गेलाह ।

वर्ष 1888 ई. मे ओ इन्टरमीडियट परीक्षा देल आर ओहि परीक्षामे सेहो सम्पूर्ण संयुक्त

प्रदेशमे सर्वप्रथम भऽ गेलाह । 1890 ई. मे बी. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कएल तथा दर्शन शास्त्र' मे आनर्स सेहो भेटलनि । ताहि समयमे सम्पूर्ण संयुक्त प्रान्तक कोनो कॉलेजमे एम. ए. संस्कृतक पठन-पाठनक व्यवस्था नहि छलइक । गंगानाथ बाबूकेँ संस्कृत पढ़बाक तीव्र इच्छा छलनि । से, ओ प्राइवेट रूपसँ संस्कृत अध्ययन करऽ लगलाह । काशीएमे रहि मिथिलाक पंडित लोकनिसँ संस्कृत पढ़ऽ लगलाह जिनका लोकनिमे सभसँ प्रख्यात महामहोपाध्याय पं० जयदेव मिश्र छलाह । वर्ष 1892 ई. मे ओ एम. ए. मे परीक्षा देल तथा द्वितीय श्रेणीमे प्रथम स्थानक संग विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान पओने रहथि । जखन ई बी. ए. मे पढ़ैत रहथि मैथिली भाषाक यशस्वी कवि ओ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक सभारत्न महामहोपाध्याय पंडित हर्षनाथ झाक जेठ कन्या 'इन्दुमती' सँ हिनक विवाह भेलनि ।

एम. ए. पास कएलाक बादो गंगानाथ झा काशीमे रहि स्वाध्यायरत भए संस्कृत साहित्यक अध्ययन करइत रहलाह। ताहि युगमे काशीक सभसँ पैघ प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान् लोकनिमे पं० जयदेव मिश्र, पंडित शिवकुमार मिश्र, पंडित गंगाधर शास्त्री तथा पंडित कैलाश शिरोमणि भट्टाचार्य रहथि । गंगानाथ बाबू इएह चारू विद्वान् प्रवरसँ संस्कृत पढ़इत छलाह । मुदा पारिवारिक असुविधासँ हिनका दड़िभंगा वापस आबए पड़लनि। दड़िभंगामे महाराजलक्ष्मीश्वर सिंह हिनका अपन राज पुस्तकालयक पुस्तकालयाध्यक्षक पदपर नियुक्त कए लेलखिन । दरिभंगा राजपुस्तकालयकेँ गंगा बाबू खूब सुसंगठित कए सजाओल, अपन उत्साह, श्रम तथा महाराज साहेबक आर्थिक सहयोगसँ राज पुस्तकालयकेँ देशक गनल-चुनल पुस्तकालय सभमे स्थान देआओल ।

एक तऽ पढ़बाक उचाट, दोसर समृद्ध पुस्तकालयक वातावरण तेसर मिथिला मध्य दड़िभंगामे रहने, हिनका संस्कृत अध्ययन दिस उत्कंठा बढ़िते गेलनि । ताहि समय दड़िभंगा राजक प्रधान पंडित महामहोपाध्याय पंडित चित्रधर मिश्र छलाह । हुनकासँ गंगानाथ झा 'मीमांसा' शास्त्रक कठिनसँ कठिन प्रश्न सब पढ़ि गेलाह । दू वर्ष धरि ई नित्य प्रातः काल तीन घंटा हुनकासँ पढ़ल करथि ।

विद्यार्थीए जीवनसँ ई बड़ दृढ़ प्रतिज्ञ एवं अध्यवसायी रहथि । ई जखन काशीमे पढ़इत रहथि, संकल्प कएने छलाह प्रतिदिन जे किछु संस्कृतमे पढ़ी ओही दिन अंग्रेजीमे ओकरा लीखि ली । एहि संकल्प निर्वाहमे ई जखन एम. ए. क परीक्षा हेतु पढ़इत छलाह तखनहि 'काव्य प्रकाश'

तथा 'सांख्य तत्त्व कौमुदी' सदृश्य कठिन ग्रन्थक अंग्रेजी अनुवाद कए लेने रहथि । दड़िभंगा अएलहुँपर ई क्रम बरोबरि चलैत रहलनि । जखन धरि ओ अपन एहि संकल्पकेँ पूरा नहि कए लेथि ओ चैन नहि लेथि ।

म्योर सेन्ट्रल कालेज प्रयागमे संस्कृतक अध्यापकक रूपमे हिनक नियुक्ति सन 1902 ई. मे भेलनि आर ओ 22 नवम्बर 1902 केँ ओहि पदपर काज करब प्रारंभ कऽ देलनि । ताहि समय म्योर सेन्ट्रल कालेजक प्रिंसपल डॉ० थीबो रहथि । डॉ० थीबो भारतीय न्याय दर्शनक बड़ पैघ विद्वान् भेने गंगानाथ बाबूक विद्वतासँ प्रभावित रहथि । से, डॉ० थीबोक सहयोगसँ गंगानाथ झा वर्ष 1907 ई. मे एक टा 'त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ कएलनि जकर नाम "Indian Thought" छलैक ! एहि पत्रिकामे बेराबेरी अनेक अतिक्लिष्ट संस्कृत दार्शनिक ग्रन्थक अग्रेजीमे अनुवाद कए गंगानाथ झा प्रकाशित कएने रहथि ।

प्रो० गंगानाथ झा "पूर्व मीमांसामे प्रभाकरक सिद्धान्त" ग्रन्थक अग्रेजीमे भावार्थ लीखि प्रकाशित कएलनि । एहि ग्रन्थ लिखबाक पुरस्कारमे प्रयाग विश्वविद्यालय हिनका वर्ष 1909 ई. मे "डी० लिट्" (डाक्टर आफ लेटर्स) क विशिष्ट उपाधिसँ विभूषित कएने छल । एक दू मास पश्चात् 1 जनवरी 1910 ई. केँ भारत सरकार दिसिसँ प्रो० गंगानाथ झा जीकेँ "जखन ओ मात्र उन्चालिस वर्षक रहथि-महामहोपाध्यायक अतिविशिष्ट सम्मानप्रद उपाधिसँ अलंकृत कएल गेल ।

महामहोपाध्याय डा० गंगानाथ झा सोलह वर्ष धरि म्योर सेन्ट्रल कालेजमे संस्कृतक अध्यापन करइत रहलाह । तकरा बाद वर्ष 1918 ई. मे काशीक गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेजक प्रिन्सिपल नियुक्त भेल रहथि। डा. झा पहिल भारतीय रहथि जे एहि कालेजक प्रिन्सिपल नियुक्त भेल रहथि । हिनकासँ पहिने एहि कालेजमे जे प्रिन्सिपल भेलाह, सभ विदेशीए । जहिया संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपल रहथि, ओ भारत सरकार द्वारा प्रथम काउन्सिल आफ स्टेट" क सदस्य मनोनित कएल गेल छलाह । वर्ष 1923 ई. धरि, ओ, ओकर सम्मानित सदस्य रहलाह । एही बीच प्रयाग विश्वविद्यालयक पुनर्संगठन भेलइक । नवीन प्रणालीक तहत कुलपतिक नियुक्ति निर्वाचनसँ होयबाक निश्चय कएल गेल छलइक, डा० गंगानाथ झा एहि विश्वविद्यालयक प्रथम कुलपति निर्वाचित भेल छलाह । एहि नव दायित्वकेँ उचित पालन हेतु ओ "काउन्सिल" क सदस्यतासँ इस्तिफा दय देलनि । एहि वाइस चान्सलरक पदपर ओ तीन खेप लगातार निर्वाचित होइत रहलाह,

नौ वर्ष धरि कार्यरत छलाह । हिनक कार्य अवधिमे प्रयाग विश्वविद्यालय हिनका "आनरेरी एल. एल. डी." क सम्मानप्रद उपाधिसँ अलंकृत कएने छल । वर्ष 1932 ई. क नवम्बर मासमे हिनक पत्नी स्वर्ग सिधारि गेलीह । आ झा साहेब चारिम वेर भाइस चान्सलर पदक हेतु ठाढ़ नहि भेलाह । वाइस चान्सलरक पद छोड़नहुँ डा० गंगानाथ झा आजीवन युनिभर्सीटीक एक्सक्युटिव कमीटीक सदस्य बनल रहलाह ।

डा० गंगानाथ झा ग्रेट ब्रिटेनक रायल एशियाटिक सोसाइटीक आनरेरी सदस्य रहथि तथा बम्बईक एशियाटिक सोसाइटी हिनका अपन "केम्पवेल मेडल" प्रदान कए सम्मानित कएने छलनि । वर्ष 1914 ई. मे भारतक सम्राटक जन्म दिनक उपलक्ष्य मे पैघ-प्रतिष्ठित लोकनिकेँ उपाधि वितरण कएल गेल छलइक जाहि मे डा० झाकेँ "नाइट" क विशेष उपाधिसँ विभूषित कएल गेल । ई उपाधि वैदुष्य ख्याति हेतु देल जाइत छलइक । पांडित्यक हेतु महामहोपाध्याय तथा विशुद्ध वैदुष्य ख्यातिक हेतु "नाइटहुड" दूहू उपाधिकेँ पओनिहार विश्व इतिहासमे मात्र मिथिलाक ई. सपूत डा० गंगानाथ झा छथि ।

महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झाक मृत्यु वर्ष 1941 ई. मे 19 नवम्बरक रातिमे तीर्थ राज प्रयागमे भेलनि । हिनक ज्ञान मृत्यु भेल छल । पद्मासन लगौने जप करइत, अत्यन्त शांत चित्तसँ भारत माताक मुकूट मणि ई पुरूष पुङ्गव एहि नश्वर शरीरकेँ त्यागने रहथि ।

डा० गंगानाथ झाकेँ पाँच पुत्र तथा एक पुत्री छलथिन । पुत्र मध्य-भवनाथ झा; अमर नाथ झा; शिवनाथ झा, विभूति नाथ झा तथा आदित्य नाथ झा । सभक सभ पुत्र सुयोग्य, विद्वान् रहइत उच्च पदपर आसीन भेलनि । सरिपों डा. गंगानाथ झा बड़ भाग्यशाली पिता रहथि ।

डा० झाक सफलता ओ उन्नतिक साधन हिनक अप्रतिम कार्यक्षमता एवं दृढ़ संकल्प छल । जाहि काजमे हाथ लगौलहुँ, ओकरा सम्पन्न कइए कए छोड़ब । जे काज आइ करबा थिक, अथवा जे कए सकइत छी तकरा टारब, हिनका अबितेहि नहि छलनि । आलस्यक तऽ हिनकामे गन्धो नहि छल । बहुत मेथोडिकल रहथि ।

पढ़ब-लिखब दिन चर्या भऽ गेल छलनि । ओ साठिसँ बेसी पुस्तक लिखलाह जाहिमे अधिकांश संस्कृत वाङ्मयक अग्रेजी अनुवाद छल । एतेक रास पोथी लिखबाक संगहि भारी-सँ-भारी दायित्व पूर्ण काज, जाहि सफलतासँ सम्पादित करइत रहलाह से हुनका प्राप्त राष्ट्रीय तथा

अन्तर्राष्ट्रीय उपाधि, अलंकार आ पदक वैशिष्ट्यसँ प्रमाणित होइत अछि । एतेक पुस्तक लिखबा लेल कतेको ग्रन्थ पढ़बाक भेल हैतनि, कतेको संभ्रांत लोकनिसँ भेंट करबाक भेल हैतनि कतेको ठाम जयबाक भेल हैतनि-आर एहि सभक संग ओतेक गंभीर दायित्वपूर्ण कार्य-ओहि प्रवीणतासँ करइत रहलाह एना क्यो अलौकिक क्षमता सम्पन्न व्यक्तिए कए सकैछ । सामान्य लोकक लेल संभव नहि बूझना जाइछ ।

शरीरसँ सेहो झा साहेब खूब स्वस्थ रहथि । पिंडश्याम रंग तेजोमय मुख मंडल । छोट खुट्टी, गुलचा-मुलचा आकर्षक व्यक्तित्व । सहज वेषभूषा, अवसर अनुकूल । हिनक शरीरक ऋषि तुल्य कान्ति छोड़ि आर कोनो वस्तुसँ हिनक विशिष्टताक बोध नहि होइक । कोनो व्यसन नहि, कोनो कुटेब नहि । संयत स्वाध्यायी ।

हिनक गप्प-सप्प सरस हास्य-विनोदक पुटक संग होइत छल; चन्द्रमाक किरण सन पांडित्य झलकइत । मुदा काजक वेर कोनो अप्रासंगिक गप नहि; अपितु भाव-भंगी किंचित् रूक्षहि रहइत छलनि । परिवारक नेना-भुटकासँ विनोदी गप्प करब हुनक स्वभाव छलनि भारतीय मान्यतामे डा० गंगानाथ झा एकटा 'ब्राह्मण' छलाह; निर्भीक, विद्यानुरागी, आस्थावादी, आस्तिक ।

डा० झा समस्त उपनिषद्केँ मथि गेल रहथि; सभ दर्शन शास्त्रक तत्त्वक विवेचना कए आत्मसात कएने छलाह । ब्रह्म मुहूर्तमे जागि, 'ब्राह्मणोचित' सकल नित्य क्रियासँ निपटब; हुनक दैनिक जीवन भऽ गेल छल । गायत्री मंत्रक सहस्त्र जाप ई नित्य करथि । हिनक स्मरण क्षमता तथा मेधा लोकोत्तर शक्ति सम्पन्न छल । अपन विहित काजक प्रति योगी जकाँ ध्यानस्थ भऽ जाथि । लगमे लोक गप्प-सप्प करइत होथि तऽ धन्नसन; चारू दिसि धीआ-पूता घोल मचएने होय, कोनो बात नहि; गंगा नाथ बाबू पद्मासन लगौने कठिनसँ कठिन पुस्तक लिखबामे मगन । साधक, सिद्ध, सुजान !

-ताराकान्त मिश्र

शब्दार्थः

आजीवन	-	जीवन भरि
दिग्भ्रम	-	भटकनाइ
व्यय	-	खर्च
संकल्प	-	निश्चय, प्रतिज्ञा
उत्कंठा	-	तीव्र इच्छा
त्रैमासिक	-	तीन मासक
मासिक	-	प्रत्येक मासक
पाक्षिक	-	पन्द्रह दिनक
साप्ताहिक	-	सात दिनक
क्लिष्ट	-	भारी, कठिन
इस्तिफा	-	त्यागपत्र, छोड़ि देब
वैदुष्य	-	विद्वता
पुङ्गव	-	श्रेष्ठ
नश्वर	-	नाशवान
सरिपों	-	वास्तवमे, निश्चित रूपसँ, सत्य
अप्रतिम	-	अतुलनीय
वाङ्मय	-	साहित्य, भाषा
व्यसन	-	आदति
आस्तिक	-	ईश्वरमे विश्वास राखएबला
घोल	-	हल्ला

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) डॉ० सर गंगानाथ झा द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका कोन ई. मे प्रकाशित भेल आ ओकर नाम की छल ?

(2) काशीक गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेजक प्रिंसिपलक पदपर हिनक नियुक्ति कहिया भेल ?

(3) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा प्रयाग विश्वद्यिालयक कुलपतिक रूपमे कय बेरि निर्वाचित भेल रहथि ?

(4) डॉ० सर गंगानाथ झाक निधन कहिया भेलनि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) महा महोपाध्याय डॉ० सर गंगानाथ झाक जन्म कहिया आ कतऽ भेलनि ?

(2) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा काशीमे किनकासँ संस्कृत पढ़ैत छलाह ?

(3) महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा ई कोन पद पर नियुक्त भेलाह ?

(4) डॉ० गंगानाथ झा किनका द्वारा आ कोन-कोन उपाधिसँ सम्मानित भेल छलाह ?

(5) संस्कृतक अध्यापकक रूपमे हिनक नियुक्ति कहिया आ कतऽ भेलनि ?

(6) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा पर एक अनुच्छेद लिखू ।

(ग) **सही गलतीः**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा बच्चहिसँ कुशाग्र बुद्धिक लोक छलाह । ☐

(2) डॉ० गंगानाथ झा इन्ट्रेन्स परीक्षा प्रथम श्रेणी मे पास भेल रहथि । ☐

(3) डॉ० गंगानाथ झाकेँ संस्कृत पढ़बाक इच्छा नहि छलनि । ☐

(4) डॉ० गंगानाथ झाक पत्नीक नाम इन्दुमती छलनि । ☐

(5) डॉ० गंगानाथ झा आजीवन युनिवर्सीटीक एक्सक्युटिव कमीटीक सदस्य बनल रहलाह । ☐

(घ) **रिक्त स्थानक पूर्ति करू:**

(1) डॉ० सर गंगानाथ झा ग्रेट ब्रिटेनक रायल एशियाटिक ..... सदस्य रहथि ।

(2) बम्बईक एशियाटिक सोसाइटी डॉ० सर गंगानाथ झाकेँ ..... मेडल प्रदान कय सम्मानित कयने छल ।

(3) डॉ० सर गंगानाथ झाक निधन .....ई. मे 19 नवम्बरक रातिमे तीर्थराज ..... मे भेलनि ।

(4) डॉ० गंगानाथ झा ..... सँ बेसी पुस्तक लिखलाह ।

(5) डॉ० गंगानाथ झा समस्त ..... केँ मथि गेल रहथि ।

(ङ.) **निम्नलिखित शब्दकेँ शुद्ध करू-**

परिक्षा, सम्पुर्न, सभारतन, स्वध्याय, अध्यन, परिश्रमिक, माहाराज ।

(च) **निम्नलिखित शब्दक विलोम शब्द लिखू:**

जन्म, दिन, पंडित, जेठ, देश, देशज ।

(छ) **निम्नलिखित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:**

डॉ० सर गंगानाथ झा उपाधि उचाट

पुस्तकालयाध्यक्ष अध्यापक पुरस्कार ।

(ज) **समानार्थी शब्दक मिलान करू:**

'क'	'ख'
(1) प्रथम	(i) पोथी
(2) सालाना	(ii) कठिन
(3) क्लिष्ट	(iii) पहाड़
(4) ग्रन्थ	(iv) वार्षिक
(5) पर्वत	(v) पहिल

भाषा अध्ययन:

(1) शारीरिक वा मानसिक व्यापार क्रिया कहबैत अछि, जेना- पढ़ब, लिखब, बुझब । पाठमे आयल क्रिया शब्दकेँ चुनिकऽ लिखू ।

(2) निम्नलिखित खारामे पाँच विद्वान्क नाम देल गेल अछि । प्रत्येक वर्णकेँ ताकि ओकरा सही क्रममे लिखू जाहिसँ कोनो तीन विद्वान्क नाम स्पष्ट हो-

वा	मि		या		ति
च		मि		ण्ड	झा
म	अ		श्र		श्र
		वि		श्र	ति
ध्या			चि		च
स्प	न	मि	प	न्दा	

(1)

(2)

(3)

✦✦✦